

करे वठु सन्तनि जो चार दींह सतिसंग ॥
 जिनजे कृपा प्रसाद सां मिले प्रेम उमंग ॥
 कदहीं थिये कीन की भजन तुंहिजे में भंग ॥
 सन्तनि जे प्रसाद सां थिया शबरी श्रभंगु ॥
 चोरे नाम जो चंगु सुखी रहु सजण सां॥